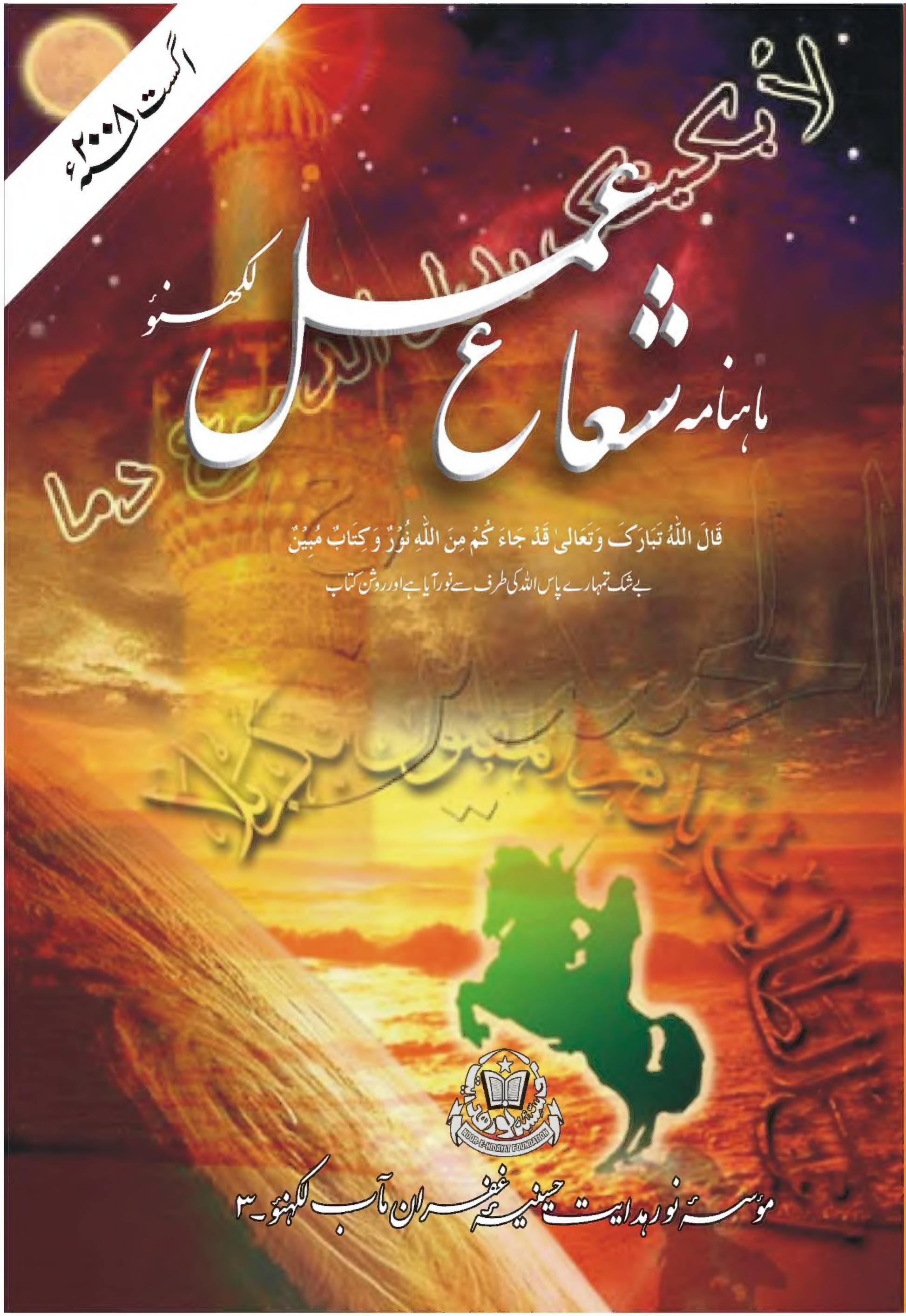

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow Aug-2008

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष–5

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक – 2

माह अगस्त – 2008 लखनऊ

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
"लखनऊ"

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफेसर सै0 हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु0 र0 आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक – 200 रु | मिलने का पता | क़ीमत – 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0 मज़मून लेखक पेज न0

1– हुसैनी किरदार का एक वरक़

प्रोफ़सर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी साहिब क़िब्ला, अलीगढ़ 3

2– ग़ैबतः कुर्आन, हदीस और साइंस की रौशनी में

मुफ़क्किरे इस्लाम डा0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहिब क़िब्ला 8

3– माँ–बाप का हक़

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहिब क़िब्ला 13

4– मुख्य समाचार

इदारा 15

इमामे ज़माना (अ०) ने फ़रमाया–

1– ग़ैबत में भी मेरा वजूद लोगों के लिए ऐसा ही फ़ायदेमन्द है जैसे बादलों की ओट से सूरज।

2– अगर हमारे चाहने वाले अपने वादों को पूरा करते तो हमारी मुलाक़ात में देर न होती और उन्हें हमारी ज़ियारत जल्द नसीब होती।

3– वह काम करो जो तुम्हें हम से नज़दीक कर दे और वह काम न करो जो हमारी नाराज़गी का सबब बने।

हुसैनी किरदार का एक वरक़

प्रोफ़ेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी साहिब क़िब्ला, अलीगढ़

तारीख़ पर निगाह रखने वाला हर इन्सान इस बात को अच्छी तरह जानता है कि बचपन से इमाम हुसैन[अ0] की तक़रीबन पूरी ज़िन्दगी एक मुसलसल परेशानी व कशमकश का मजमुआ रही।

हुसैन[अ0] का बचपन ही था जब शफीक़ नाना, रसूले इस्लाम मुहम्मद मुस्तफा[स0] का इन्तेक़ाल हो गया। रसूल[स0] की आँख बन्द होना थी कि दुनिया ही बदल गई। अहलेबैत का घर दुनिया की परेशानियों और बलाओं का गहवारा बन गया। वह लोग हाकिम बन गए जिनका मक़सद ही अहलेबैते[अ0] को अज़ियतें देना था।

अब कभी अली[अ0] व फातिमा (स0) के घर के गिर्द लकड़ियाँ जमा की जाती हैं कभी अली[अ0] के गले में रस्सी डाली जाती है। इन तमाम मुसीबतों में अपने बाप, माँ और भाई बहनों के साथ–साथ हुसैन इब्ने अली[अ0] भी बराबर के शरीक रहे।

पच्चीस साल के लम्बे अर्से और क़त्ले उसमान के बाद अहलेबैत को इत्मिनान और सुकून की सांस लेने का मौक़ा मिल सकता था जबकि अमीरुलमोमिनीन अली इब्ने अबी तालिब[अ0] को मुसलमानों ने अपना सरबराह चुन लिया। मगर जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान के फितनों ने उस दौर में भी इत्मिनान नसीब न होने दिया और आख़िरकार इब्ने मुल्जिम की ज़रबत से अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ0] शहीद हो गए। अब मुसलमानों ने इमाम हसन[अ0] को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया। मगर जल्द ही अमीरे शाम मुआविया ने ख़लीफतुल मुस्लिमीन पर चढ़ाई कर दी। इमाम हसन[अ0] ने मुसलमानों के फ़ायदे को पेशे नज़र रखते हुए अमीरे शाम से सुल्ह कर ली।

अब अहलेबैत[अ0] के ख़िलाफ आँधियाँ शिद्दत से चलने लगीं। मस्जिदों में मिम्बरों पर अली[अ0] व हसन[अ0] पर दुश्नाम तराज़ी (बुरा भला कहना) आम हो गई। अमीरुलमोमिनीन के शैदाइयों को क़ैदख़ानों में डाल दिया गया। अहलेबैत[अ0] का नाम लेना जुर्म क़रार दिया गया।

यक़ीनन यह दौर इमाम हुसैन[अ0] के लिए बहुत सख़्त होगा। मगर अभी सर पर एक सरपरस्त था। इमाम हसन[अ0] जैसे भाई ज़िन्दा थे। ग़मो अलम में हुसैन[अ0] का एक शरीक मौजूद था। ख़ानादान का एक बुज़ुर्ग बाक़ी था। ज़िम्मेदारियाँ अभी हसन[अ0] पर थीं, हुसैन[अ0] पर नहीं। अभी अली[अ0] के चाहने वालों के लिए ''दस्तूरे अमल'' मुतरत्तब करने का फर्ज़ हसन के कांधे पर था, हुसैन[अ0] पर नहीं मगर 50 हि0 में इमाम हसन[अ0] की शहादत के बाद से हुसैन[अ0] इब्ने अली[अ0] की ज़िन्दगी का इन्तिहाई सख़्त दौर शुरु हो गया, जो दस साल तक लगातार क़ायम रहा। इस ''सब्र शिकन'' ज़माने में अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास हर हर लम्हा रखना और उससे ग़ाफ़िल न होना सिर्फ हुसैन[अ0] जैसे सैय्यिदुस्साबिरीन ही के बस की बात थी।

इस इम्तिहानी दौर की शुरुआत उस वक़्त से हो गई थी जब इमाम हुसैन[अ0], और

अहलेबैत के चाहने वाले इमाम हसन[अ0] का जनाज़ा लेकर मस्जिदे नबवी में दफ़्न करने की ग़रज़ से जा रहे थे और रास्ते में मरवान और दूसरे लोगों ने आकर जनाज़े पर तीर बरसाने शुरु कर दिये। उस वक़्त इमाम हुसैन[अ0] की हालत क्या होगी? इसका हर इन्सान अन्दाज़ा लगा सकता है। अभी थोड़ी देर पहले भाई का साया सर पर से उठा है। अचानक न सिर्फ ख़ानदान बल्कि पूरे एक ''फिरक़े'' की रहनुमाई करने की ज़िम्मेदारी सर पर आ गई है। हर तरफ ग़म व गिरयाँ का माहौल है और एक जमाअत की तरफ से भाई के जनाज़े पर तीर आना शुरु हो जाते हैं। उस वक़्त यक़ीनन अस्हाब को जोश आया होगा। शायद मुहम्मद इब्ने हनफिया और अबुल फज़लिल अब्बास ने तलवारें खींच ली हों मगर इमाम[अ0] सबको समझा कर जनाज़े को पलटाकर जन्नतुल बक़ीअ् में दफन कर देते हैं।

अगर हुसैन[अ0] उस वक़्त तलवार खींच लेते तो दुनिया को कहने का मौक़ा मिल जाता कि हुसैन भाई के रवैय्ये से बिल्कुल अलग थे। जैसे ही उनका इन्तेक़ाल हुआ बहाना बनाकर जंग के लिए तैयार हो गए। मगर हुसैन[अ0] को तो साबित करना था कि यह मुम्किन ही नहीं कि हम में जुदाई हो। हम तो ख़ुदा के हुक्म के पाबन्द हैं। जब ख़ुदा का हुक्म सुल्ह करने के लिए होगा हम सुल्ह कर लेंगे। जब उसका हुक्म जिहाद के लिए होगा तलवार खींच लेंगे। जब तक उसका हुक्म रहेगा जंग करेंगे और जब उसका हुक्म होगा सर कटा देंगे।

अगर उस वक़्त हुसैन[अ0] तलवार खींच लेते तो उनकी ''मज़लूमी'' बहस का मुद्दा बन जाती। लोगों को कहने का मौक़ा मिल जाता कि हुसैन[अ0] ने ख़ुद सुलह के मुआहेदे की ख़िलाफवर्ज़ी की। आम लोगों का अमन व सुकून बर्बाद करने की कोशिश की। अब अगर उन्हें शहीद भी कर दिया गया तो एतेराज़ की क्या गुन्जाईश और शाम की हुकूमते के लिए मुआहदे की दूसरी शर्तों को तोड़ने का जवाज़ भी मिल जाता। इसलिए हुसैन[अ0] ने तय कर लिया कि जब तक शाम की हुकूमते मुआहेदे को बिल्कुल न छोड़ देगी मैं उसके ख़िलाफ़ ख़ड़ा न हूँगा।

इस मौक़े के बाद भी उन हाकिमों न जाने क्या–क्या तकलीफें इमाम[अ0] को पहुँचाईं। एक इस्लामी रहनुमा के लिए यही तकलीफ क्या कम है कि ख़ुदा के बनाए और रसूल[स0] के पहुँचाए हुए क़ानून में तबदीलियाँ की जाने लगीं। ''ज़कात फितरा'' की मिक़दार बदल दी गई। ''ख़लीफतुल मुस्लिमीन'' सोने के ज़ेवरात पहनने लगा। दरिन्दे जानवरों की खाल फर्श के तौर पर बिछाई जाने लगी। इस्लाम में हुक्म था कि पैख़ाने क़िब्ला रुख न हों, शाम में तमाम पैख़ाने क़िब्ला की तरफ बनवाए गए, अरफा के दिन तलबिया कहने का हुक्म था, मुआविया ने उस हुक्म को मन्सूख़ (ख़त्म) कर दिया। हज़रत मुहम्मद मुस्तफा[स0] और अली–ए–मुर्तज़ा[अ0] और अब तक तमाम साहाबी भी बिस्मिल्लाह नमाज़ में बुलन्द आवाज़ से कहते थे, मुआविया ने आवाज़ के साथ बिस्मिल्लाह कहने से मना कर दिया। ''दीनी भाईचारगी'' होने की बुनियाद पर अमीरे शाम ने एक शख़्स हत्तात बिन ज़ैद की मीरास पर क़ब्ज़ा कर लिया। हालांकि शरीअते मुहम्मदी में मीरास नसबी वारिस को मिलती है। ग़रज़ इस तरह की न जाने कितनी ''बिदअतें'' राएज हो गईं।

इन तमाम वाक़ेआत की ख़बर इमाम हुसैन[अ0] को भी यक़ीनन पहुँची होगी। इमाम हुसैन[अ0] के लिए तलवार उठाने के वास्ते सिर्फ यही एक वजह काफी थी कि इस्लाम के वजूद

को शामी हुकूमत से ख़तरा था मगर हुसैन[अ०] को तो सब्र व रिज़ा का नमूना क़ायम करना था। उनको तो साबित करना था कि खुदा के चुने हुए रहनुमा न मौक़ा परस्त होते हैं, न जल्दबाज़ बल्कि वह तो वही करते हैं जो उसकी मर्ज़ी हो। चाहे इस सिलसिले में उनको कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़े, कितनी ही तकलीफें उठाना पडें।

बनी उमय्या के हाकिमों ने सिर्फ दीने खुदा में तब्दीली नहीं की बल्कि उसकी हिफाज़त करने वालों को बर्बाद कर दिया। सैकड़ों कुर्आन के हाफिज़ और रसूल[स०] के सहाबी क़त्ल किये गये। इन ही में हजर बिन अदी भी थे जिनकी शहादत से दुनिया–ए–इस्लाम में तहलका मच गया था। अमीरे शाम मुआविया ने हजर को उनके वतन से बुलवाकर मौत के आग़ोश में पहुँचा दिया। उनकी ग़लती क्या थी? बस यह कि वह अली[अ०] और उनकी औलाद का नाम लेने वाले थे। मुसलमानों के चौथे ख़लीफा के मद्दाह थे। यह अमीरे शाम के नज़दीक इतना बड़ा जुर्म था जिसकी सज़ा मौत और बस मौत थी, हजर के क़त्ल पर अहलेबैत[अ०] के मुख़ालिफीन तक तड़प उठे थे। पहले ख़लीफा की साहबज़ादी आयशा को जब इस अलमनाक वाक़ेए की ख़बर हुई तो वह बिलबिला के कह उठीं कि ''अगर मुआविया को कूफे वालों की बेदारी का थोड़ा सा भी एहसास होता तो वह ऐसा न करते।'' मगर जिगर ख़्वारा का फ़रज़न्द जानता था कि अरब से ''आदमी'' ख़त्म हो चुके हैं। खुदा की क़सम हजर और उनके साथी अरब के सर और दिमाग की हैसियत रखते थे। दूसरे ख़लीफा के साहबज़ादे अब्दुल्लाह इब्ने उमर को जब हजर के क़त्ल का हाल मालूम हुआ तो वह दाढ़े मार मार कर रोने लगे। जब इन लोगों का यह हाल था तो इमाम हुसैन[अ०] पर इस वाक़ेए का कितना असर हुआ होगा? इसका हर इन्सान अन्दाज़ा कर सकता है।

इमाम[अ०] ने इस हादसे पर अपने रंज व अलम का इज़हार भी फरमाया जिसकी ख़बर अमीरे शाम मुआविया तक पहुँची और उनको डर हुआ कि कहीं इमाम[अ०] अपने जाँनिसारों को लेकर उनके ख़िलाफ खड़े न हो जाएं। इसलिए उन्होंने इमाम हुसैन[अ०] के नाम एक धमकी भरा ख़त भी लिखा। मुआविया के इस ख़त का हुसैन[अ०] ने जो तारीख़ी जवाब दिया है उसने बहुत सी हक़ीक़तों के चेहरों को बेनक़ाब कर दिया। इमाम[अ०] जानते थे कि उनके वालिद की ख़ामोशी से, जो इस्लाम के लिए उस वक़्त ज़रूरी थी, ग़लत फायदा उठाकर लोगों ने कह दिया था कि अली[अ०] अपने ज़माने के हाकिमों के मुख़ालिफ नहीं थे वरना वह सदा–ए–एहतेजाज क्यों न बुलन्द करते। इसलिए हुसैन[अ०] ने अपने इस ख़त में अमीरे शाम की उन तमाम ग़लतियों का ज़िक्र कर दिया जिनसे इस्लाम और अहकामे खुदा और रसूल[स०] को चोट पहुँची थी। हुसैन[अ०] का यह ख़त मुआविया के ''आमाल नामे'' की हैसियत रखता है जिसमें अमीरे शाम को उनके तमाम करतूतों से आगाह कर दिया गया है।

इस ख़त में हुसैन[अ०] ने लिखा है कि:

''मैं अभी तुमसे जंग करने का कोई इरादा नहीं रखता और ख़ामोशी को गले लगाए हुए हूँ मगर मैं खुद इस ख़ामोशी से खुश नहीं हूँ और न यह ख़ामोशी तुम लोगों के लिए सनद बन सकती है।''

इमाम[अ०] का यह जुमला बताता है कि उनको एहसास था कि अमीरुलमोमिनीन[अ०] की ख़ामोशी को बातिल परस्तों ने सनद के तौर पर इस्तेमाल किया और हुसैन[अ०] नहीं चाहते थे कि बनी उमय्या के बदतर लोग उनकी ख़ामोशी को भी

सनद क़रार दे सकें और कह सकें कि ''हुसैन[अ0] को यज़ीद से इख़्तेलाफ थे, मुआविया से नहीं।''

आगे चलकर इमाम अ0 ने मुआविया के जर्मों की फेहरिस्त इस तरह पेश की हैः ''क्यों मुआविया! क्या तुम ही वह नहीं हो जिसने हजर इब्ने अदी को क़त्ल किया? क्या तुम ही वह नहीं हो जिसने ऐसे नमाज़ गुज़ारों और ख़ुदा परस्तों को क़त्ल किया जो ज़ुल्म व बिदअत को पसन्द नहीं करते थे?——— इमाम[अ0] ने इस तरह मुआविया पर यह वाज़ेह कर दिया कि बनी उमय्या ख़िलाफत ज़ुल्म, जौर और बिदअत की ख़िलाफत है जिसमें ख़ुदा परस्तों और हक़ व सदाक़त के परस्तारों के लिए रहम व करम की कोई गुन्जाईश नहीं। इसके बाद हुसैन[अ0] ने लिखा है किः ——— ''ऐ मुआविया क्या तुम ही वह नहीं हो जिसने ज़ियाद इब्ने सुमैय्या को –जो बनी सक़ीफ के गुलाम अबीद राओ का लड़का था– अपना भाई और अपने बाप अबुसुफियान का बेटा क़रार दिया। हालांकि अल्लाह के रसूल[स0] ने फरमाया था कि बेटा उसका समझा जायगा जो औरत का असली शौहर है और ज़िनाकार के लिए तो बस पत्थर हैं और कुछ नहीं, मगर तुमने अल्लाह के रसूल[स0] के इस हुक्म को अपने मक़सद के लिए पीछे डाल दिया।'' हुसैन[अ0] के जुमले ने साबित कर दिया कि उनको अपनी नाइन्साफियों से ज़्यादा शरीअत में होने वाली तब्दीलियों का सदमा था —— फिर इमाम[अ0] ने तहरीर फरमाया कि —— ''वह तुम ही थे जिसने हुक्म दिया था कि जो अली[अ0] का पैरवी करने वाला हो उसे मार डालो''——— खत की आख़िरी लाइनों में इमाम हुसैन[अ0] ने निहायत साफगोई से काम लेते हुए बनी उमय्या के ज़ालिमों पर वाज़ेह कर दिया कि तुम्हारा यह ख़याल ग़लत है कि मैं तुम्हारे ख़िलाफ लोगों को उभार कर उम्मते मुहम्मदी के सफीने को फितना और फसाद की मौजों के थपेड़ों में डाल रहा हूँ।'' इमाम[अ0] ने हक़ व सदाक़त के चेहरे पर से यह तहरीर फरमाकर नक़ाब खींच ली है किः

''इस उम्मत में तुम्हारी हुकूमत से बढ़कर कोई फितना नहीं है और मैं अपने नफ्स, अपने दीन और उम्मते मुहम्मदी के लिए किसी फायदे को इससे बढ़कर नहीं समझता कि मैं तुम्हारे ख़िलाफ खड़ा हो जाऊँ। अगर मैं ऐसा करूँ तो यह यक़ीनन कुर्बते इलाही का सबब होगा।''

इस ख़त ने साबित कर दिया कि इमाम[अ0] मदीने में मुतमइन नहीं थे। उनको हर लम्हा इसका एहसास था कि शामी हुकूमत ने इस्लाम को तबाही व बर्बादी के दहाने पर ला खड़ा किया है और इस सख़्त वक़्त में इस्लाम को हुसैन[अ0] की ज़रूरत है। मगर वह ख़ामोशी के साथ उस घड़ी का इन्तिज़ार कर रहे थे कि जब हसन[अ0] की आख़री बात भी मिटा दी जाए। तारीख़ इस ''फैसलाकुन'' मोड़ की तरफ़ आहिस्ता–आहिस्ता उस वक़्त से बढ़ने लगी जब मुआविया को अपने बेटे यज़ीद की ख़िलाफत मुसलमानों से मनवाने की धुन हुई ———

मुआविया ये बात अच्छी तरह जानते थे कि यज़ीद एक फासिक़ व फाजिर (झूठा और मक्कार) और बदकार जवान है जिसको मज़हब से दूर–दूर का लगाव नहीं ——— वह यह भी जानते थे कि वह अपने इस मक़सद में पूरी तरह कामयाब नहीं हुए हैं कि अरब के आदमियों में ''इन्सानियत'' नाम की भी बाक़ी न रह जाए और इसलिए यज़ीद की ख़िलाफत के सामने मुसलमानों का सर झुका लेना रेगिस्तान में पानी तलाश करने से कम नहीं था। मगर वह अपने कुछ ''बुलन्द हिम्मत'' मददगारों को लेकर इस अहम काम के

लिए उठ खड़े हो गए।

इस मक़सद के हासिल करने के लिए हर वह चाल चली गई जो दुनिया में मौजूद था। कभी ताक़त के बल पर लोगों की पेशानियाँ झुका दी गईं, कभी दौलत के जादू से मुसलमानों के दीन व ईमान को ख़रीदा गया, कभी ख़िताबत की क़लाबाज़ियों से लोगों को क़ायल किया गया — मगर कुछ ऐसे मनचले और दुनिया के लालचियों की नज़रों में ''सर फिरे'' अल्लाह के बन्दे भी अरब के रेगिस्तानी माहौल में मौजूद थे जो न ताक़त से डरते थे, न पैसे से दबना और न जाहिलाना दलीलों से ख़ामोश होते थे।

अमीरे शाम को इन्हीं कुछ लोगों का सबसे ज़्यादा डर था। उनमें सबसे पहले हुसैन बिन अली^{अ०} की ज़ात थी ——— मुआविया जानते थे कि हुसैन^{अ०} हक़ के अलावा किसी ताक़त से दबने वाले इन्सान नहीं हैं मगर फिर भी उन्होंने अपने ज़हन को मुतमइन करने के लिए वह तमाम हथियार इस्तेमाल किये जिनसे कोई भी इन्सान दब सकता है। कभी दौलत से लालच दिलाई गई, कभी ताक़त से डराया गया मगर सब बेकार — हुसैन^{अ०} की ज़ात एक अटल पहाड़ थी जिसको अपनी जगह से हटा देना किसी के बस की बात नहीं थी ———

इस मौक़े पर इमाम हुसैन^{अ०} ने हिक्मते अमली का वह बेमिसाल नमूना पेश किया जिसने साबित कर दिया कि दीनी रहनुमा सियासत के भी माहिर होते हैं............. हुसैन^{अ०} यह जानते हुए कि सुल्हनामे की आख़िरी शर्त भी पैरों तले रौंदी जा रही है सख़्ती से काम नहीं लिया वरना दुनिया हुसैन^{अ०} को जारेह क़रार देती। मुआविया भी अपने के तजुर्बे की बुनियाद पर इमाम के ख़िलाफ तश्द्दुद के इस्तेमाल से कतरा रहे थे और वह जानते थे कि अगर हुसैन जैसा रहनुमा उनके हाथ से ज़ाहिर बज़ाहिर शहीद हो गया तो इस्लामी दुनिया में उनकी रही सही साख भी ख़त्म हो जाएगी और मुसलमानों में एक ऐसा लावा फूट पड़ेगा जो बनी उमय्या ख़िलाफत को जला कर राख कर देगा। वह चाहते थे कि तशद्दुद का हरबा इस्तेमाल किये बग़ैर वह किसी तरह हुसैन^{अ०} से यज़ीद की बैअत हासिल कर लें मगर उनकी यह तमन्ना दिल की दिल ही में रह गई यहाँ तक कि रजब 60 हि0 में मौत के फरिश्ते ने आकर उनको अपने पंजों में ले लिया।

मुआविया के मरते ही हुसैन^{अ०} इब्ने अली^{अ०} के लिए वह दस साल से चला ''हौसला शिकन'' और ''सब्र आज़मा'' दौर ख़त्म हो गया जो इमाम हसन^{अ०} की शहादत से शुरु हुआ था।

इन दस सालों में हुसैन^{अ०} जिस ज़हनी और नफ्सियाती कशमकश में फंसे रहे वैसी इम्तिहानी कशमकश कर्बला के वाक़िअे के ज़ेल में भी हुसैन^{अ०} को नहीं झेलना पड़ी। मगर यह हुसैनी किरदार था जिसने बातिल के तमाम मन्सूबों को उस दौर में भी ख़ाक में मिला दिया। अगर हुसैन^{अ०} तशद्दुद पर तैयार हो जाते तो बनी उमय्या की माँगी मुराद पूरी हो जाती और फिर शायद वाक़िअ–ए–कर्बला जैसा इन्क़ेलाबी कारनामा दुनिया में सामने न आ सकता।

हुसैन^{अ०} ने ख़ामोशी के साथ उस दौर में जिस तरह मुसलमानों की रहनुमाई की ज़िम्मेदारी को निभाया है वह सिर्फ हुसैन^{अ०} और किसी हुसैन जेसे ही के बस की बात थी ———

हक़ीक़त में यह दस साल वाक़िअ–ए–कर्बला के मुक़द्दमे की हैसियत रखते हैं और हुसैन^{अ०} इब्ने अली^{अ०} की ये ख़ामोशी फज़ा (माहौल) के उस सुकून की तरह है जो किसी आने वाले ग़ैरमामूली तूफान का पता देता है।

□□□

ग़ैबत

कुर्आन, हदीस और साइंस की रौशनी में

मुफ़क्किरे इस्लाम डा0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहिब क़िब्ला

माद्दी दुनिया की निगाहों से छुपी हुई बेशुमार चीज़ों पर यक़ीन रखने के बावजूद मज़हबी दुनिया में ग़ैबत से इन्कार इन्सान की आदत है यही आदत कभी उस से अन्देखे ख़ालिक़ का इन्कार कराती है, कभी आख़िरत और उससे जुड़ी हुई तमाम चीज़ों से और कभी ख़ुद अपनी रूह के वजूद से। इसी आदत का एक रुख़ यह है कि अक्सर ख़ुदा के मानने वाले भी ग़ायब ख़ुदा के सामने उस वक़्त तक सजदा करने के लिए तैयार नहीं होते जब तक उस ग़ायब ख़ुदा का कोई माद्दी पैकर या मज़हर तराश न लिया जाए।

आज का इन्सान दुनिया के एक–एक ज़र्रे के आइन–ए–ज़ाते किरदगार होने के बावजूद ख़ालिक़ के वजूद का सिर्फ़ इसलिए इन्कार कर देता है कि वह ख़ुद मुजस्सम शक्ल में उनके सामने क्यों नहीं आ जाता। मगर ''जुर्म ग़ैबत'' पर ख़ालिक़ के वजूद से इन्कार कर देने वाला इन्सान भी मख़लूक़ की ग़ैबत पर ईमान रखने पर मजबूर है। ख़ालिक़ को न मानने वाला इन्सान तस्लीम करता है कि काएनात एटमी ज़र्रों से बनी है और यह कि फ़ितरत के कुछ क़ानून हैं जो इन ज़र्रों को अलग–अलग शक्लें देते हैं और इन्हें मुख़तलिफ पैकरों में ढालते हैं मगर यह कि आज तक ऐटमी ज़र्रों ही को ज़ाहिरी हवास से महसूस किया जा सका है न फितरत ही को 'देखा' जा सकता है। फितरत एक तजरीदी (Abstract) चीज़ है जो ज़ाहिरी हवास से महसूस किये जाने से तअल्लुक़ ही नहीं रखती। सिर्फ उसके असरात, उसके मज़ाहिर को देखकर उसका पता चलाया जा सकता है। अब यह दूसरी बात है कि फितरत के मज़ाहिर अगर फितरत के वजूद पर दलील हैं, फितरत के असरात अगर फितरत के क़ानून वजूद को बताते हैं तो ख़ुद क़वानीने फितरत एक ''क़वानीन साज़'' (क़ानून बनाने वाले) अलीम व क़दीर के वजूद पर किस Logic के एतेबार से दलील नहीं बन सकते?

आज की दुनिया जिस टकराव का शिकार है वह यह है कि एक तरफ सिर्फ दिखाई न दे सकने के जुर्म में दुनिया की सबसे बड़ी हक़ीक़त यानी ख़ालिक़ के वजूद का इन्कार कर दिया जाता है, मगर दूसरी तरफ रेडियाई लहरों, कशिशे सक़्ल की लहरों, ब्लैक होल्ज़ (Black Holes) कभी न दिखाई दे सकने वाले सूरज से लाखों गुना बड़े सितारों, मा वरा बनफ़्शी शुआओं और ऐसी–ऐसी काएनात की बहुत सी हक़ीक़तों की खोज और उन पर ईमान साइंस की दुनिया का सरमाया–ए–इफ़्तेख़ार क़रार दिया जाता है क्या अजीब फ़िक्री टकराव है आज की दुनिया जिसका शिकार है।

बहरहाल ऐसे लोगों से ग़ायब इमाम के वजूद को मानने का मुतालबा ख़ुद अपनी ही अक़्ल के ग़ायब होने का पता देगा। मगर हैरत उन मुसलमानों पर है जो 'युअ्मिनून बिल–ग़ैब''

के ज़ेल में ग़ायब ख़ुदा को मानते हैं, जिन्नातों को तस्लीम करते हैं, फरिश्तों पर ईमान रखते हैं, शैतान को तस्लीम करते हैं, नबियों और ग़ैर नबियों, ग़ायब इन्सानों को मानते हैं, ग़ायब जानवरों पर ईमान रखते हैं, मगर जब ग़ायब इमाम को मानने के लिए कहा जाता है तो क़हक़हे लगाते हैं, हंसते हैं, मज़ाक़ उड़ाते हैं................यह हंसने की नहीं बल्कि रोने की जगह है।

कुरआने करीम

इमाम की ग़ैबत के बारे में हमारे अक़ीदे का मज़ाक़ उड़ाने वाले हमारे वह भाई जो ख़ुदा की किताब को उम्मत की हिदायत के लिए काफ़ी समझते हैं काश किताबे ख़ुदा ही में ग़ौर कर लेते। पहले ही पारे में इरशाद होता हैः– ''क़ुर्आन हिदायत है मगर उन ख़ुदा से डरने वालों के लिए जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और हमारी दी हुई नेमतों में दूसरों को भी शरीक बनाते हैं।'' (बक़रः–2) अरबी ग्रामर के लिहाज़ से मुज़ारेअ् में मानों में इस्तेमरार पाया जाता है यह Continues Tence है। मुज़ारेअ् किसी काम के 'होने' या 'होते रहने' को बताता है। मज़कूरा आयत में 'युअ्मिनूना', 'युक़ीमूना' और 'युनफ़िक़ूना' तीनों सीग़े मुज़ारेअ् के आए हैं। पहले, आख़िरी दो सीग़ों 'युक़ीमूना' और 'युनफ़िक़ूना' को समझ लीजिये तो पहला सेग़ा 'युअ्मिनूना' ख़ुद ही समझ में आ जाएगा। 'युक़ीमुनस्सलाता' यानी एक बार नमाज़ नहीं पढ़ लेते बल्कि जब नमाज़ का वक़्त आता है नमाज़ क़ायम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। 'युनफ़िक़ूना' यानी यह नहीं कि एक दो बार ख़र्च कर दिया, एक दो बार ख़ैरात कर दी और बस! नहीं जब भी कुछ मिला उसमें दूसरों को भी शरीक कर लिया। दूसरे लफ़्ज़ों में उन्होंने नमाज़ क़ायम करना और ख़ुदा की रहा में ख़ैरात करना अपना उसूल बना लिया है। जब वक़्त आया नमाज़ के लिये खड़े हो गये, जब कुछ मिला दूसरों को उसमें शरीक कर लिया। इन तमाम बातों के ज़रिये 'युअ्मिनूना बिलग़ैब'' को समझने की कोशिश करें यानी सिर्फ़ कुछ ग़ैबी हक़ीक़तों पर ईमान ले आना काफी न होगा बल्कि ग़ैबत पर ईमान लाना ज़िन्दगी का उसूल बनाना होगा। ग़ैब पर ईमान लाने की आदत डालनी होगी। यह अन्दाज़ बता रहा है नबूव्वत ख़त्म हो गई मगर ग़ैबत अभी बन्द नहीं की गई है। ईमान बिलग़ैब का तअल्लुक़ सिर्फ़ इन्हीं चीज़ों से नहीं है जिनका तअल्लुक़ गुज़रे से हो, मुस्तक़बिल में भी कुछ हक़ीक़तें ऐसी आने वाली हैं जिन पर ग़ैबत के पर्दे डाल दिये जाएंगे और ''युअ्मिनूना बिलग़ैब'' उसी वक़्त मुकम्मल होगा जब उस ग़ैबत को भी बेचूँ चरा तस्लीम कर लिया जाए।

इमामे ज़माना की ग़ैबत का मज़ाक़ उड़ाने वाले शायद इस हक़ीक़त से बेख़बर हैं कि जानशीने नबी से पहले ख़ुद नबी को कई बार ग़ैबत के पर्दों में छुपाया गया था। शबे हिजरत का वाक़ेअः तो सब ही के सामने है कि हुज़ूर मुश्रिकीन की भीड़ के दरमियान से गुज़रते चले गये और यह मुश्रिकीन ऐसे अन्धे बना दिये गये कि उन्हें ख़बर ही न हुई। आप जब इन मुश्रिकीन के दरमियान से गुज़र रहे थे तो सूरए यासीन की इस आयत तिलावत फ़रमा रहे थेः ''हमने उनके सामने भी दीवार बना दी, उनके पीछे भी दीवार बना दी, इस तरह उनको ढांक दिया कि उनकी आँखें तो हैं मगर देख नहीं सकते।'' पन्द्रहवीं सदी हिजरी के तक़रीबात मनाने वाले मुसलमान क्या हिजरत को याद रखेंगे और ग़ैबत को भूल जाएंगे।

आप[स०] की इस ग़ैबत का हाल तो हर उस शख़्स को मालूम है जिसे तारीख़े इस्लाम के

बारे में ज़रा सी भी मालूमात है मगर ऑहज़रत[सा०] के लिए इससे पहले, बेसत के बिल्कुल शुरुआती दौर में भी ग़ैबत हो चुकी थी जिसकी थोड़ी सी वज़ाहत यह है:

अबुलहब पैग़म्बर[सा०] का चचा था मगर उसकी शादी क़बील–ए–बनुउमैय्या के सरदार हर्ब की बेटी उम्मे जमील से हुई थी। उम्मे जमील, अबुसुफ़ियान की बहन, मुआविया की फूफी और यज़ीद की दादी थी। उम्मे जमील ने ऑहज़रत की दुश्मनी विरासत में पाई थी। अबुलहब की इसके साथ शादी हुई तो अबुलहब भी आप[सा०] का दुश्मन हो गया। इन दोनों ने मिलकर जितना ऑहज़रत[सा०] को सताया, शायद किसी ने भी न सताया। अबुलहब और उसकी बीवी उम्मे जमील की मज़म्मत में ''सूरए लहब'' (इसका एक नाम सूरए मसद भी है) नाज़िल हुआ तो उम्मे जमील गुस्से में आकर रसूल[सा०] की तौहीन करने के लिए आप[सा०] को तलाश करने लगी।

ऑहज़रत[सा०] मस्जिदुल हराम में हज़रत अबूबक्र के साथ बैठे थे। जनाबे अबूबक्र ऑहज़रत से फरमा रहे थे कि ''सरकार! जब से सूरा उतरा है उम्मे जमील का पारा चढ़ा हुआ है। वह मक्का की गली कूचों में आप[सा०] को ढूँढती फिर रही है। मुझे बड़ा अन्देशा है कि हुज़ूर के लिए इस बला बे दरमाँ की तरफ से''

अभी यह बातचीत चल रही थी कि उम्मे जमील बिजली की तरह कौन्दती और नागिन की तरह फन्कारती, मस्जिदुल हराम में दाख़िल होते दिखाई दी। हज़रत अबूबक्र ने फ़रमाया कि ''बड़ा ग़ज़ब हो गया, वह आ गई, मुझे बड़ा अन्देशा है, पता नहीं यह बदज़बान हुज़ूर के साथ क्या सुलूक करे।'' हुज़ूर ने मुकम्मल इत्मिनान के साथ जवाब दिया: ''तुम घबराओ नहीं। इसे यहाँ आने दो जब वह यहाँ आएगी तो उसे तुम दिखाई दोगे मैं दिखाई न दूँगा।'' उन्होंने तअज्जुब से पूछा कि ''हुज़ूर! यह कैसे होगा?'' हम दोनों तो साथ–साथ बैठे हैं।'' हुज़ूर ने फरमाया: ''वही होगा जो मैं कह रहा हूँ।'' अभी यह गुफ्तगू हो ही रही थी कि वह तीर की तरह सीधी उसी जगह आ गई और हज़रत अबूबक्र की तरफ़ मुतवज्जे होकर चीख़ती चिल्लाती रही कि ''मुहम्मद मिल जाएं तो बताऊँ, मुहम्मद मिल जाएं तो मज़ा चखाऊँ।'' मज़े की बात यह है कि हुज़ूर वहीं बैठे रहे मगर उस बदनसीब को न दिखाई दिये।

अरबी मसादिर (बुनियादी किताबों) के अलावा इस वाक़ेए की तफ़सील मौलाना मौदूदी की ''तफहीमुल कुरआन'' में ''सूरए लहब'' की तफ़सीर में देखी जा सकती है।

ग़ैबत के इस मुशाहेदे के बाद किसी बरहक़ हादी के पर्दे–ए–ग़ैबत में छुप जाने का मज़ाक़ उड़ाना ''सिद्दीक़ की पैरवी करने वालों'' को तो ज़ेब नहीं देता। ''युअ्मिनूना बिबअ्ज़िन व यक्फुरूना बिबअ्ज़िन''

साइंस की खोज

दुनिया की हक़ीक़तों का साइंसी दलीलों से पता लगाने वालों ने यह हैरतनाक खोज की है कि दुनिया का सारा सिस्टम कई तरह की लहरों पर क़ायम है। चुनांचे यह हर शै से निकलने वाली उठने वाली लहरें ही हैं जिनके ज़रिये हमें तरह–तरह की आवाज़ें सुनाई देती हैं, तरह–तहर की चीज़ें दिखाई देती हैं और किसी चीज़ की ख़ुशबू या बदबू महसूस होती है।

हर वह चीज़ जो हमें दिखाई दे रही है इसीलिए कि उसमें रौशनी की लहरें उठ रही हैं जो आँखों से टकरा कर उस चीज़ को हमें दिखा

रही हैं। आवाज़ें भी असल में एक तरह की लहरें है जो हमारे कानों के पर्दों से टकराकर उन पर्दों में आवाज़ का एहसास पैदा कर रही हैं। खुशबू और बदबू को ख़ास तरह की लहरों ही के ज़रिये कुव्वते शाम्मा (सूँघने की कुव्वत) को अपने वजूद का एहसास दिलाती हैं। मगर यह सारा सिस्टम "क़द्दरहू तक़दीरा" के तहत क़ानूनों, उसूलों और पैमानों में जकड़ा हुआ है। कोई आवाज़ हमें उस वक़्त सुनाई देती है जब आवाज़ की लहरें हमारे कान के पर्दे से टकराएं। मगर इन लहरों के पैमाने में हमारे कान के पर्दे आवाज़ की सिर्फ उन्हीं लहरों का एहसास कर सकते हैं जिनकी Frequency एक सेकेण्ड में 40 हज़ार तक हो। एक सकेण्ड में 10 से कम या एक सकेण्ड में 40 हज़ार से ज़्यादा अगर तमव्वुज हो तो इसका एहसास हमारे रुजहान को आवाज़ की सूरत में हो सकेगा।

चमगादड़ एक परिन्दा है जो कुव्वते बसारत (देखने की ताक़त) से बिल्कुल महरूम है उसकी आँख होती ही नहीं। मगर आपने देखा होगा कि यह परिन्दा तेज़ी से इधर से उधर और उधर से इधर उड़ता रहता है। मगर क्या मजाल जो किसी चीज़ से टकरा जाए। रात की तारीकी हो, बारीक से बारीक तार किसी कोठरी में बाँध दें आप उस तार को न देख सकेंगे और टकरा जाएंगे, दूसरे जानवर उसमें उलझ जाएंगे मगर क्या मजाल जो यह अन्धा परिन्दा उससे टकरा जाए और उसमें उलझ जाए।

इल्मे हैवानात (Zology) बताता है कि यह परिन्दा उड़ता है तो अपने मुँह से मुसलसल आवाज़ें निकालता रहता है ये आवाज़ें सामने वाली हर चीज़ से टकरा–टकरा कर वापस होती रहती हैं और इसी वापस आने वाली आवाज़ से उस परिन्दे को हैरतनाक तरीक़े पर रुकावट बनने वाली हर चीज़ का पूरा–पूरा एहसास हो जाता है और यह उससे साफ बच निकलता है। (बज़ाहिर) अन्धे चमगादड़ के बचाव का यही तरीक़ा है जिसकी नक़ल में आज साइंस ने राडार का सिस्टम बनाया किया है जिसकी बदौलत लम्बी दूरियों, समन्दर की तहों और आसमान की बुलन्दियों में नज़रों से दूर चीज़ों का पता चला लिया जाता है। ख़ास बिजली की लहरों को हवा में या समन्दर की तहों की तरफ फेंका जाता है। यह लहरें जब किसी चीज़ से टकराती हैं तो अपने मरकज़ (Centre) की तरफ वापस होती है। और फिर स्क्रीन पर उन लहरों के ज़रिये से वह चीज़ दिखाई देने लगती है जिससे टकराकर यह पलटती हैं।

बहरहाल चमगादड़ आवाज़ें निकालता भी रहता है और उसकी पलटती आवाज़ सुनता भी रहता है। मगर हम को न उसके मुँह से निकलने वाली आवाज़ सुनाई देती है न वह पलटने वाली आवाज़। यह इसलिए कि उसकी आवाज़ से हवा में जो लहरें उठती हैं उनकी Frequency इस दायरे से बाहर है जिनका एहसास हमारे कान के पर्दे कर सकते हैं।

यानी कुदरत ने हमें कुव्वते सामेआ (सुनने की सलाहियत) दी है मगर उस कुव्वत को अधूरा रखा है। हम सिर्फ महदूद आवाज़ों को ही सुन सकते हैं मगर बहरहाल वह क़ादिर व तवाना इस बात पर कुदरत रखता है। जैसा कि आपने इसी परिन्दे की मिसाल में देखा........... कि इससे बेहतर सलाहियत रखने वाले कान पैदा कर दे। इसके लिए यह बिल्कुल मुम्किन है कि वह अपने ख़ास बन्दों को ऐसे काम दे दे जो उन आवाज़ों को भी सुनने पर कुदरत रखते हों जिन्हें आम इन्सान न सुन सकते हों।

हमें फरिश्ते की आवाज़ न सुनाई दी तो हमने वह्यी का इन्कार कर दिया। मगर जो कान एक मामूली परिन्दे की आवाज़ न सुन सकें वह अगर फरिश्ते की आवाज़ न सुने तो हैरत की क्या बात है।

सुनने के तज़किरे के बाद आईये अब बसारत (देखना) को देखें हम किसी चीज़ को रौशनी ही में देख सकते हैं। सूरज की रौशनी तरह–तरह के रंगों की शुआओं से मिलकर बनती है। रंग का फर्क़ मौजों की क़दो क़ामत के फर्क़ से पैदा होता है। रौशनी की लहरों बड़ी से बड़ी लहर 1000000/8 सेन्टीमीटर है यह लाल रंग की दिखाई देती है। छोटी से छोटी लहर 1000000/26 सेन्टीमीटर है। इससे हमें बनफ्शी रंग दिखाई देता है इनसे बड़ी शुआएं भी हैं और छोटी भी मगर हमारी आँखों को महसूस नहीं होतीं। चुनानचे मावरा बनफ्शी शुआएं हैं मगर महसूस नहीं होतीं।

फिर क्या यह अक़्ल के हिसाब से मुम्किन नहीं है कि ख़ालिक़े काएनात अपने कुछ ख़ास बन्दों की नज़रों की सलाहियत में इज़ाफ़ा कर दे और उनकी कुव्वते बसारत (देखने की सलाहियत) इस हद तक बढ़ा दे कि उनमें बसारत इन लहरों को भी महसूस करने लगे आम इन्सान जिनको महसूस करने से आजिज़ हैं।

और अगर यह ऐन मुम्किन है कि ख़ालिक़े काएनात अपने कुछ ख़ास बन्दों की देखने और सुनने की सलाहियतों की हदों को दोनों तरफ ज़रा–ज़रा बढ़ा दे तो फिर उसका कुदरती नतीजा यह होगा कि यह ख़ास बन्दे वह देखेंगे जो हमें दिखाई न देगा और वह सुनेंगे जिसके सुनने से हम आजिज़ होंगे।

फिर अगर उसने एक तरफ फ़रिश्तों के जिस्म से उठने वाली लहरों के क़द ज़रा बदल दिये हों और उनकी आवाज़ों की लहरों के तमव्वुज में ज़रा तब्दीली कर दी हो और दूसरी तरफ इन्हीं तब्दीलियों की मुनासिबत से अपने कुछ ख़ास बन्दों के बसारत व समाअत के सिस्टम में तब्दीली कर दी हो तो उसमें कौन सी चीज़ इल्म व अक़्ल के ख़िलाफ होगी कि वह ख़ास बन्दे उस फ़रिश्ते को देखें मगर हम न देख सकें वह उसकी आवाज़ को सुनें, हम न सुन सकें।

इस उसूल पर उन तमाम चीज़ों का क़यास किया जा सकता है जो ऑहज़रत[स॰] और आपके अहलेबैते ताहिरीन[अ॰] के लिए शुहूद व हुज़ूर की मंज़िल में थीं और हमारे लिए मंज़िले ग़ैब में यानी ऐसे मौजूदात का पाया जाना बिल्कुल अक़्ल के क़रीब है जिनको हम अपने ज़ाहिरी हवास से महसूस कर पा रहे हों और ख़ुदा के कुछ ख़ास बन्दे अपने ज़ाहिरी हवास से उन्हें महसूस कर रहे हैं।

और यहीं पर यह भी समझ लीजिये कि ख़ुदा अगर किसी को पर्दा–ए–ग़ैब में छुपाना चाहता है तो उसे मआज़अल्लाह कोई बहुत पापड़ बेलने की ज़रूरत नहीं है। हमारी नज़रों से किसी को छुपा देने के लिए इतना काफी है कि उसके जिस्म से निकलने वाली रौशनी की लहरों के पैमाने ज़रा बदल दिये जाएं। इतनी सी तब्दीली उसे हमारी नज़रों से छुपाने के लिए काफ़ी होगी।

ग़ैबत के इस तरह के नमूने सांइस के मुसल्लमात (मानी कुबूल की हुई बातों में) से हैं। इसलिए किसी ज़ात का पर्दा–ए–ग़ैबत में होना किसी भी सूरत इल्म व साइंस के ख़िलाफ नहीं कहा जा सकता। □□□

माँ-बाप का हक़

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी साहब क़िब्ला

माँ–बाप को जितनी अहमियत व बुज़ुर्गी इस्लाम ने दी है वह किसी मज़हब में नहीं है। इनकी बुज़ुर्गी के लिए शायद सिर्फ इतना लिख देना ही काफी होगा कि अगर माँ–बाप में से कोई अपनी ज़रूरत के लिए अपनी किसी औलाद को मुस्तहब काम से रोक दे तो वह मुस्तहब काम हराम हो जायगा और अगर किसी मुस्तहब काम का हुक्म दे दें तो वह मुस्तहब काम वाजिब हो जायगा।

कुर्आने मजीद में माँ–बाप की बुज़ुर्गी

खुदा की किताब कुर्आन मजीद में जितना माँ–बाप के बारे में ज़ोर दिया गया है किसी और मामले में नहीं मिलेगा। जगह–जगह अपनी इबादत और शुक्र अदा करने के हुक्म के साथ–साथ माँ–बाप के साथ अच्छे सुलूक का तज़किरा किया है।

जैसा कि इरशाद होता हैः और जब हमने बनीइस्राईल से ये अहद लिया कि तुम सब अल्लाह के अलावा किसी की इबादत न करो, और माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करो।

(सूरए बक़रः 83)

दूसरी जगह पर इरशाद हो रहा हैः अल्लाह की इबादत करो, किसी को उसका शरीक न बनाओ और माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। (सूरए बक़रः 36)

सबसे ज़्यादा ज़ोर और तफ़सील सूर–ए–असरा में हैः ''और तुम्हारे परवरदिगार ने ये फैसला कर दिया कि उसके अलावा किसी की इबादत न करो और माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करो।'' यहाँ पर भी अपनी इबादत के ज़िक्र के साथ ही साथ माँ–बाप के साथ अच्छे सुलूक को बयान किया गया है जैसे कुदरत का एलान है कि मेरी इबादतों में इतने न खो जाओ कि अपने माँ–बाप के साथ अच्छे सुलूक को भूल जाओ। शायद इस बात की तरफ भी इशारा हो कि मेरी इबादतों का सलीक़ा उस वक़्त नहीं आ सकता जब तक माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक न करो।

''जब दोनों में से एक या दोनों तुम्हारे पास हों और बूढ़े हो जाएं तो तुम्हें उफ़ कहने की भी इजाज़त नहीं है।''

औलाद का सबसे सख़्त इम्तिहान उस वक़्त होता है जब माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं, छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा करते हैं, बात–बात पर नाराज़ हो जाते हैं, चलने फिरने से लाचार हैं, बिस्तर पर पड़े होते हैं। हर वक़्त उनकी सेवा की ज़रूरत है। मुमकिन है कभी उनकी गन्दगी भी साफ करना पड़े। ऐसे वक़्त ख़ुदावन्दे आलम देख रहा होता है कि कहीं माथें पर शिकन तो नहीं, कभी ज़बान पर शिकायत के अलफाज़ तो नहीं। बुढ़ापे में कोई बात चाहे हो चाहे न हो गुस्सा आ जाता है लेकिन शरीअत का हुक्म है कि जवाब में उफ भी नहीं कह सकते ''कभी उनसे झिड़क कर बात न करना'', ''हमेशा अच्छे और नर्म अन्दाज़ से बात करना'', ''हमेशा उनके सामने अपने कन्धों को झुकाए रखो'' यह उस ज़ात का फ़रमाना है जो इन्सान की रग–रग को जानता है। हम अपने समाज में बराबर देखते हैं कि समाज के

किसी नीचे तबक़े से तअल्लुक़ रखने वाले किसी शख़्स ने अपनी औलाद को मेहनत मज़दूरी करके पढ़ा लिखाकर किसी क़ाबिल बना दिया और किसी ऊँचे दुनियावी ओहदे पर पहुँच गया तो उसे अपने साथियों से बाप की पहचान कराने में शर्म और ज़िल्लत महसूस होती है। आयत में शायद इसी बात की तरफ इशारा है कि लाख तुम दुनियावी तौर पर बढ़ जाओ और तुम्हारे माँ–बाप देखने में कम दर्जे वाले हों लेकिन कभी उनको ज़लील न समझना बल्कि हमेशा अपने को उनके सामने ज़लील समझते रहना। ''यह दुआ माँगते रहो कि खुदावन्दे आलम माँ–बाप पर रहम नाज़िल फरमा जिस तरह उन्होंने बचपने में हम पर रहम खाकर हमारी परवरिश की थी'' यह दुआ हमेशा औलाद को यह याद दिलाती रहेगी कि अगर इस वक़्त माँ–बाप उनके मोहताज हैं तो कभी यह भी अपने माँ–बाप के मोहताज थे और आलाद की ज़िन्दगी माँ–बाप ही के रहम व करम पर है।

माँ–बाप का दर्जा मासूमीन[अ०] की नज़र में

1– जिहाद का मौक़ा था सब लोग अपने–अपने नाम जिहाद पर जाने के लिए पेश कर रहे थे एक जवान ने अल्लाह के रसूले[स०] से कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल[स०] मुझे जिहाद पर जाने का बहुत शौक़ है लेकिन मेरी माँ राज़ी नहीं है क्योंकि उसे मेरी ज़रूरत है तो रसूल[स०] ने फरमायाः जाकर अपनी माँ की सेवा करो एक दिन माँ की सेवा करना एक साल अल्लाह की राह में जिहाद करने से बड़ा है।

2– एक शख़्स अल्लाह के रसूल[स०] के पास आया और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल[स०]! मेरा दामन हर गुनाह से भरा है क्या मेरे लिये भी तौबा है? रसूल[स०] ने पूछा कि क्या तुम्हारे माँ–बाप में से कोई ज़िन्दा है? उसने जवाब दिया मेरा बाप ज़िन्दा है, आपने फ़रमाया जाकर उसकी सेवा करो (यानी जितनी उसकी सेवा करते जाओगे तुम्हारे गुनाह माफ होते चले जाएंगे) इसके बाद हज़रत[स०] ने फ़रमाया अगर इसकी माँ ज़िन्दा होती तो इसके गुनाह ज़्यादा जल्दी माफ़ हो जाते)।

3– इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] का इरशाद है कि एक बार जनाबे मूसा[अ०] ने दुआ के वक़्त एक शख़्स को ख़ुदा के अर्श के साये में देखा। जनाबे मूसा[अ०] ने पूछा यह कौन है? बारगाहे इलाही से जवाब आया इस शख़्स में दो ख़ूबियाँ पाई जाती हैं (1)अपने माँ–बाप के साथ नेकी करता है (2)दूसरों की बुराई से परहेज़ करता है।

4– इमाम हसन असकरी[अ०] के इस इरशाद से माँ–बाप की बुजुर्गी का अन्दाज़ा होता है। आप[अ०] ने औलाद को ताकीद की कि अगर माँ–बाप को कोई चीज़ दिया करो तो इस तरह कि तुम्हारा हाथ नीचे हो और माँ या बाप का हाथ ऊपर हो। यानी इस तरह न दिया करो जिस तरह फक़ीर को देते हैं बल्कि इस तरह पेश किया करो जिस तरह किसी बादशाह के दरबार में तोहफ़ा दिया जाता है।

ऊपर बयान की गई आयतों और रिवायतों से यह बिल्कुल साफ़ हो जाता है कि हर औलाद पर माँ–बाप की इज़्ज़त और उनके साथ अच्छा सुलूक करना वाजिब है। उनकी बेइज़्ज़ती करना बल्कि अच्छा सुलूक न करना भी बहुत बड़ा गुनाह है। ऐसा गुनाह कि जब तक ख़ुद माँ–बाप माफ़ न करें औलाद की मग़फ़िरत मुमकिन नहीं है और ऐसी औलाद लाख दूसरे नेक काम करे उसे कोई काम फायदा पहुँचाने वाला नहीं है और सिवाए जहन्नम के उसका और कोई ठिकाना नहीं है।

□□□

इदारा

मुख्य समाचार

ऐसा काम न किया जाए जिससे इख़्तेलाफ़ हो:

आयतुल्लाहिलउज़्मा सै0 अली हुसैनी सीस्तानी मद्दज़िल्लहू

11 जुलाई 2008ई0 को एतिहासिक आसिफी मस्जिद में जुमे के खुतबे में क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब ने रजब के महीने की फ़ज़ीलत बयान करते हुए मौजूदा हालात पर बात की और आयतुल्लाह सीस्तानी का वह आलमी पैग़ाम जो हिन्दुस्तानियों ख़ास कर लखनऊ वालों के लिए था, मोमिनीन को सुनाया। क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद के मुताबिक़ आयतुल्लाह सीस्तानी मद्दज़िल्लहू ने लखनऊ के हालात पर ग़ौर करते हुए कहाः "हमारी क़ौम के लोग कोई ऐसा काम न करें जिससे मुसलमानों में इख़्तेलाफ पैदा हो। उन्होंने कहा कि अगर मुसलमान आपस में लड़ते रहे तो इस्लाम के दुश्मन अपनी साज़िशों में कामयाब हो जाएंगे इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि आपसी इत्तेहाद और भाईचारगी को बाक़ी रखें। उन्होंने मुसलमानों को यह पैग़ाम भी दिया कि अगर उनके महल्ले और पड़ोस में कोई मुसलमान परेशान है तो उसकी मदद करें और आपस में इस तरह मिलजुल कर रहे कि इस्लाम के दुश्मन अपनी साज़िशों में कामयाब न हो सकें।" क़ाएदे मिल्लत ने बताया कि जिस वक़्त आयतुल्लाह सीस्तानी लखनऊ वालों के लिए अमन का पैग़ाम दे रहे थे उस वक़्त शहर के मोतबर लोग और उलमा मौजूद थे। जिनमें मौलाना गुलज़ार अहमद, मौलाना क़मर अब्बास जौनपूरी और क़ारी ताहिर नज़मी के नाम शामिल हैं। क़ाएदे मिल्लते ने कहा कि आयतुल्लाह सीस्तानी ने इत्तेहाद और भाईचारगी का जो पैग़ाम दिया उसके लिए हम सब की ज़िम्मेदारी है कि हर इन्सान तक मरज–ए–वक़्त का यह पैग़ाम पहुँचाएं। मौलाना ने ईरान, इराक़, शाम के हालात भी बयान किये और इराक़ के मोमिनीन की बुरे हालात और मुसीबतों का ज़िक्र करते हुए वहाँ के हालात की सलामती के लिए दुआ करायी।

हज़रत ग़ुफ़रानमॉब रह0 की याद में सेमिनार

हिन्दुस्तान के पहले मुजतहिद आयतुल्लाहिलउज़्मा सै0 दिलदार अली नक़वी ग़ुफ़रानमॉब(रह0) के देसे के मौक़े पर 19 रजब 1429हि0 मुताबिक़ 23 जुलाई 2008ई0 को नूरे हिदायत फाउण्डेशन स्थित इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब लखनऊ में एक सेमिनार हुआ जिसमें सबसे पहले हाफिज़ ख़ुर्शीद अली रिज़वी साहब ने तिलावते कलाम पाक की। इसके बाद मौलाना सै0 कामिल रज़ा साहब ने ग़ुफ़रानमॉब की हयात व ख़िदमात पर एक जामे मक़ाला पेश किया, उसके बाद दूसरे मुक़र्रिरीन ने हज़रत ग़ुफ़रानमॉब की इल्मी व अमली ज़िन्दगी पर रौशनी डालते हुए उनकी तहरीक के ख़ास पहलुओं (1)अपनी अक़ीदों को समझो (2)अपनी मज़हबी काम को अन्जाम दो (3)अपनी मज़हबी हैसियत को ज़ाहिर करने में न हिचकिचाओ, का भी तज़करा किया। आख़िर में हज़रत ग़ुफ़रानमॉब के ईसाले सवाब के लिए फातिहाख़्वानी की गई।

आयतुल्लाह इश्तेहारदी की रिहलत

अफ़सोस की आलिमे जलील आयतुल्लाह शैख़ अली पनाह इश्तेहारदी मस्जिदे फैज़िया क़ुम में बाद नमाज़ मग़रिबैन मेहराब ही में थे कि मौत के पैग़ाम पर लब्बैक कहते हुए अपनी हक़ीक़ी मालिक से जा मिले। आप ने बहुत सी किताबें लिखीं जिनमें से एक अहम किताब मदारिके उरवतुल वुस्क़ा है जो 30 जिल्दों में है। आप साहिबे अमलिया भी थे। आपकी तद्फीन 10 जुलाई 2008ई0 को हरमे मासूम–ए–क़ुम में हुई। इदारा इस आलिमे जलील की रिहलत पर सोगवार है और दुनिया–ए–शीओयत को ताज़ियत पेश करता है।

एक ही तजरिबे ने दुश्मनों के गुब्बारे की हवा निकाल दी: डा0 महमूद अहमदी निजाद

ईरान के ऐटमी प्रोग्राम पर बातचीत नाकाम रहने की सूरत में इस्लामी मुल्क पर हमले के लिए अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने तैयारी शुरु करने के सिलसिले में इस्राईल से क़दम आगे बढ़ाने को कहा है। पेन्टागन अफ़सर के हवाले से 'सण्डेटाइम्स' में छपी रिपोर्ट के मुताबिक़ बुश इन्तिज़ामिया ने यरोशलम को ख़बर की है कि वह ईरान की अहम ऐटमी जगहों पर लम्बी दूरी वाले हथियारों से हमले की सूरत में इस्राईल की मदद करेगा। अमरीकी राष्ट्रपति ने इस्राईल को हमले की तैयारी के लिए एक तरह से मन्जूरी दे दी है।

अफ़सरों के हवाले से कहा गया है कि इसके तहत तैयारी के सिलसिले में क़दम आगे बढ़ाने, हमले के लिए तैयार रहने और यह बताने को कहा है कि आप सब तैयार रहें। अमरीकी राष्ट्रपति की यह बात ईरान पर हमले को लेकर फौजी अफसरों के एतराज़ के बाद आई है। ऐसे हमले के लिए अमरीका अपने हिफाज़ती ग्रुप को तैनात नहीं करेगा और न ही इसराईल इराक़ में फौजी कैम्प बना सकेगा।

ईरानी राष्ट्रपति डा0 महमूद अहमदी निजाद ने ईरान में फौज के हिफाज़ती दस्तों के फौजी तजरिबे के बारे में कहा कि आपने देखा हमारे एक ही फौजी तजरिबे ने दुश्मनों के गुब्बारों की हवा निकाल दी। उन्होंने कहा कि अब वह कहते हैं कि या फौजी तजरिबे मेयार के ख़िलाफ हैं हमें यह पता नहीं कि यह मेयार किसने तय किये हैं। शायद वह खुद को मेयार समझते हैं। डा0 अहमदी निजाद ने कहा कि हालिया फौजी तजरिबे में हमने अपनी दिफाई ताक़त को ज़ाहिर किया जो हमारी दिफाई ताक़त का सिर्फ़ एक हिस्सा था। ईरानी राष्ट्रपति ने कहा कि वह हमें कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकते क्योंकि हमारी फौज में दुश्मनों के हाथ काटने की पूरी ताक़त है। उन्होंने कहा कि अमरीका में भी कुछ अक़्लमन्द लोग हैं जो किसी तरह की ग़लती की इजाज़त नहीं देते। हालांकि हमारी फौजी ताक़त भी इस तरह के काम की इजाज़त नहीं देगी।

इरानी राष्ट्रपति ने कहा कि इस वक़्त इलाक़ाई और इंटरनेश्नल हालात भी ईरान के हक़ में हैं। उन्होंने कहा कि हमारा मुल्क तमाम मुल्कों के लिए दोस्ती, इन्साफ, अमन और तरक़्क़ी का अलमबरदार है। उन्होंने कहा कि यह हक़ीक़त है कि दुश्मन ईरान की मुख़ालेफत करे और ईरानी सद्र ने कहा कि वह एक तरफ तो पैकेज देकर बातचीत की दावत देते हैं और दूसरी तरफ ग़लत प्रोपेगण्डा करते हैं। डा0 अहमदी निजाद ने कहा कि उनमें से कुछ लोगों ने हमें धमकी दी है कि अगर हमने उनकी बात न सुनी तो वह ऐसा वैसा कर देंगे लेकिन वह ईरान का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। उन्होंने ईरान में अमरीकी दूतावास खोले जाने के बारे में पूछे गये सवाल के लिए कहा कि अभी इस बारे में कोई माँग नहीं की गई है।

शिया–सुन्नी उलमा आपसी बातचीत से मामला तय करें:

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद

इदार–ए–अन्जुमनहाए अज़ा की तरफ से 11 जुलाई 2008ई0 को बाद नमाज़े जुमा आसिफी इमामबाड़े में एक जल्से का आयोजन किया गया जिसमें मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब का शुक्रिया अदा किया गया। अपने ग़ैर मुल्की दौरे से वापस आकर मुख्यमंत्री से मिलकर हुकूमत के ज़रिये माजूर विश्वविद्यालय की दी गई वक़्फ शहदरा की 27 बीघा 2 बिस्वा ज़मीन को वापस दिये जाने के मुतालबे के बाद डी0एम0 के जारी हुक्मनामे में इस ज़मीन को छोड़कर तामीर की ख़बर पर मौलाना कल्बे जवाद साहब की कोशिशों को सराहते हुए उनकी गुलपोशी की गयी।

इस मौक़े पर मौलाना कल्बे जवाद साहब ने अवाम का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि क़ौम हमारे साथ है और क़ौम के इत्तेहद की वजह से ही हमारी मुहिम कामयाब हो रही है। उन्होंने कर्बला की ज़मीन पर तामीर की मुख़ालिफत करते हुए कहा कि इस नाजाएज़ काम को फौरन बन्द करके ज़मीन कर्बला नरही को फौरन वापस दी जाए।

उन्होंने कहा कि मस्जिद शहदरा शिया सेण्ट्रल वक़्फ बोर्ड में दर्ज है। वक़्फ शहदरा मस्जिद की ज़मीन पर जो मुक़द्दमें अदालत में चल रहे हैं उनके फौरन हल करने के लिए सुन्नी और शिया उलमा को चाहिए कि आपस में बैठकर बातचीत के ज़रिये उसको हल करें क्योंकि यह मुसलमानों का आपसी मसअला है जो बातचीत से हल हो सकता है, मौलाना ने अमरीका के साथ ऐटमी डील मुआहेदे में छुपी बातों पर कहा कि वह भी अवाम के सामने लाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि अमरीका मुस्लिम मुख़ालिफ पॉलिसियों का लीडर है और हम हिन्दुस्तानी मुसलमान यह नहीं चाहेंगे कि अमरीका यहाँ पर भी अपनी पॉलिसी पर अमल करके हमारी एकता को ख़त्म कर दे।

मौलाना ने यू0पी0 से मुतालबा किया कि अज़ादारी के छोटे जुलूसों पर लगी पाबन्दी हटाई जाएं। और जुलूसों गिनती बढ़ायी जाए।